भारत सरकार

जल शक्ति मंत्रालय

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2400

जिसका उत्तर 13 मार्च, 2025 को दिया जाना है।

.....

भदोही में सीवेज ट्रीटमेंट योजना के रखरखाव में डीबीओटी मॉडल की भूमिका

2400. श्री विद्युत बरन महतोः

श्री जुगल किशोरः

क्या **जल शक्ति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) भदोही में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के रखरखाव में डिजाइन-बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर (डीबीओटी) मॉडल की क्या भूमिका है और पिछले अपशिष्ट जल प्रबंधन मॉडल की तुलना में इसका क्या महत्व है;

(ख) किस तरह से 'गंगा थ्रू द एजेस- ए लिटरेरी बायोस्कोप' पहल नदी संरक्षण में सार्वजनिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए साहित्य और शिक्षा को एकीकृत करेगी; और

(ग) पश्चिम बंगाल में ड्रोन आधारित निगरानी परियोजना नमामि गंगे मिशन-।। के अंतर्गत वनीकरण प्रयासों की प्रभावशीलता को किस प्रकार से बढ़ाएगी?

उत्तर

जल शक्ति राज्य मंत्री श्री राज भूषण चौधरी

(क): पूर्व में, इन परियोजनाओं को ईपीसी (इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण) अनुबंध के आधार पर क्रियान्वित किया जाता था, जिसमें चयनित बोलीदाता का कार्यक्षेत्र एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) को डिजाइन करना, उपकरण खरीदना और एसटीपी का विनिर्माण करना था। एसटीपी का संचालन और रखरखाव (ओ एंड एम) निष्पादन एजेंसी की ही एकमात्र जिम्मेदारी होती थी।

अब, इन परियोजनाओं को डीबीओटी मॉडल (डिजाइन-बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर) के आधार पर क्रियान्वित किया जा रहा है, जिसमें चयनित बोलीदाता, एसटीपी घटकों के डिजाइन, एसटीपी के विनिर्माण और 15 वर्षों की अवधि के लिए एसटीपी के संचालन के लिए उत्तरदायी होता है। डीबीओटी मॉडल यह सुनिश्चित करता है कि एसटीपी अनुबंध के दायरे के अनुसार प्रमुख कार्य-निष्पादकता संकेतकों (केपीआई) को पूरा करे, जिससे प्रदूषण निवारण के उद्देश्य को मजबूती मिले।

इसके अलावा, भदोही शहर में इस समय कोई एसटीपी नहीं है, हालांकि, एनएमसीजी ने नमामि गंगे मिशन-II के तहत 127.26 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से " भदोही शहर, उत्तर प्रदेश

में नालों/नालों और एसटीपी के इंटरसेप्शन और डायवर्जन" के लिए एक परियोजना को मंजूरी दी है।

(ख): *गंगा थ्रू द एजेस - ए लिटरेरी बायोस्कोप* एक कार्याकलप करने वाला अभियान है, जो स्कूल कार्यक्रमों और सामुदायिक सहभागिताओं जैसी जमीनी पहलों तथा डिजिटल और साहित्यिक अभियानों जैसे ऑफ-ग्राउंड प्रयासों के मिश्रण से प्रेरित है। इसका उद्देश्य गंगा के इर्द-गिर्द पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और साहित्यिक जुड़ाव की एक स्थायी विरासत विकसीत करना है, जिससे समुदायों के साथ निरंतर संपर्क और गहरे संबंध सुनिश्चित होता है।

(ग): एनएमसीजी द्वारा उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईएसएसी) [अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) और उत्तर पूर्वी परिषद (एनईसी) की एक संयुक्त पहल] को "पश्चिम बंगाल में नमामि गंगे के अंतर्गत लगाए गए वृक्षारोपण की ड्रोन आधारित निगरानी" परियोजना को मंजूरी दी गई है।

इस परियोजना का उद्देश्य वनीकरण परियोजनाओं की निगरानी प्रणाली को मजबूत करना है। ड्रोन सर्वेक्षण पौधों की कनोपी को कैप्चर करेगा जो पौधों की मजबूती को इंगित करेगा और वनीकरण क्षेत्रों की उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजरी प्रदान करेगा। इस परियोजना के तहत, एक ड्रोन-आधारित डिजिटल डेटाबेस विकसित किया जाएगा।

*****